धान की खेती की नई तकनीक का सफल परीक्षण

जल्लोवाल, 8 नवंबर (नि.सं.) : पेप्सीको इंडिया ने आज यहां धान की सीधी बिजाई विधि के सफल परीक्षण नतीजों की घोषणा की। डायरेक्ट सीडिंग तकनीक के प्रयोग से पानी की खपत में 40 प्रतिशत तक गिरावट दर्ज की गई है। इसी तरह से उत्पादन लागत में भी रु. 1,000 प्रति एकड़ से अधिक की कमी आई है। जिन खेतों में इस विधि से धान की खेती की गई थी, वहां अब इस फसल की कटाई चल रही है।

पेप्सीको इंडिया इस तरह के परीक्षण का अंतिम चरण जल्लोवाल में स्थानीय किसानों के सहयोग से 20 एकड़ जमीन पर पूरा किया है। इससे पहले भी पेप्सीको इंडिया पिछले तीन वर्षों से इसी तरह के प्रयोग जल्लोवाल स्थित अपने खुद के रिसर्च एवं डिवेल्पमेंट विभाग की जमीन पर करती आ रही है।

आम तौर पर धान को किसी छोटी नर्सरी में बोया जाता है, जहां से करीब चार सप्ताह बाद वह पौध हटाकर पानी भरे मुख्य खेतों में रोपे जाते हैं ताकि वह पूर्ण फसल के रूप में विकसित हो सके। फसल के बड़े होने तक खेतों में करीब तीन इंच ऊंचाई तक पानी भरकर रखा जाता है, खासतौर पर इसलिए ताकि खर-पतवार न बढ़ जाए। इस पारम्परिक विधि में पानी की अत्यधिक खपत होती है, जबकि पेप्सीको इंडिया द्वारा सफलतापूर्वक जांची-परखी गई 'डायरेक्टर सीडिंग' विधि में पानी की खपत और उत्पादन लागत दोनों में ही काफ़ी कमी नोट की गई है।

इस अवसर पर पेप्सीको इंडिया के एक्सपोर्ट एवं विदेशी मामलों के एग्जीक्यूटिव डायरेक्टर, श्री अभिरास सेठ ने कहा, धान की खेती को पानी की भारी खपत के लिए जाना जाता है। लंबे समय तक इसकी खेती होने के कारण पंजाब में जल स्तर ही नीचे चला गया है। इसके अलावा किसानों को पंप और ट्यूबवैल आदि अधिक समय तक चलाने के कारण ऊर्जा पर अधिक व्यय करना पड़ता है।

पंजाब में पेप्सीको इंडिया ने कृषि के क्षेत्र में 1989 में अपनी गतिविधियां प्रारंभ कीं। इस दौरान टमाटर और मिर्ची की अनेक नई प्रजातियों का विकास किया गया तथा इनकी कृषि के उन्नत तरीके अमल में लाए गए, जिससे पंजाब के किसानों को खास तौर पर बहुत लाभ मिला है और इन दोनों फसलों की पैदावार भी बढ़ गई।